पाठ :

शिरीष के फूल

(हजारी प्रसाद द्विवेदी)

जीवनपरिचय :

हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के आरत दुबे का छपरा में सन् 1907 में हुआ था। उन्होंने काशी के संस्कृत महाविद्यालय से शास्त्रीय परीक्षा उत्तीर्ण करके सन् 1930 में काशी हिंदु विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधी प्राप्त की। भारत सरकार ने इन्हें पदमभूषण से अलंकृत किया ये परंपरा के साथ प्रगतिशील आधुनिक मूल्यों के समन्वय में विश्वास करते थे। सन् 1979 में इनका निधन हो गया।

रचनाएँ :

निबंध संग्रह – अशोक के फूल, कल्पलता, विचार और वितर्क, कुटिज, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद
उपन्यास : बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चंद्र लेख, अनामदास का पोथा
आलोचना – साहित्यिक सूर साहित्य, मध्यकालीन बोध का स्वरूप, हिंदी साहित्य का आदिकाल आदि।
संपादन – विश्व भारतीय पत्रिका (शांति निकेतन)

साहित्यिक विशेषताएँ :

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य भारतवर्ष के सांस्कृतिक इतिहास को दर्शाता है, ये ज्ञान की बोध और पंडित्य की सहृदयता से ढाल

कर एक ऐसा रचना संचार हमारे सामने उपस्थित करते हैं, जो विचार की तेजस्वीता, कथन के लालित्य और बंध की शास्त्रीयता का संगम है।

भाषाशैली :

लेखक की भाषा तत्सम प्रधान है। इनकी रचनाओं में पांडित्य प्रदर्शन की अपेक्षा सहजता व सरलता है। तत्सम शब्दावली के साथ इन्होंने तद्भव, देशज, ऊर्दू, फारसी आदि भाषाओं का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान :

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में आपका नाम युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगा।

प्रश्न : 1 लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

उत्तर : 2. शिरीष का पेड़ अवधूत की भाँति बसंत के आगमन से लेकर भाद्रपद मास तक बिना किसी बाधा के पुष्पित होता रहता है। जब ग्रीष्म ऋतु में सारी पृथ्वी धुँआ रहित अग्निकुंड की भाँति बन जाती है, सभी के प्राण जलने लगते हैं। लू के कारण हृदय सूखने लगता है, तो ऐसा लगता है। जैसे- शिरीष का पेड़ कालजयी अवधूत की भाँति अजीवन की अजयता का मन्त्र प्रचार कर रहा हो, वह संसार के समस्त प्राणियों को धैर्यशील चिंतारहित एवं कर्तव्यशील बने रहने के लिए प्रेरित करता है। इसी कारण लेखक ने उसे संन्यासी की तरह माना है।

प्रश्न : 2 हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी - कभी जरूरी हो जाती है — प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर : 2 शिरीष के फूल कोमल होते हैं. ये केवल भौंरों के पैरों का कोमल भार ही सहन कर सकते हैं। इस पर पक्षियों का भार असहनीय हो जाता है। इस संसार की अवस्था पाकर ये तुरंत टूटकर जमीन पर आ गिरते हैं।

किंतु ये शिरीष के फूल बड़े मजबूत और कठोर होते हैं। वे नए फूलों के निकल आने पर भी अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए स्थान छोड़ते हैं। इस प्रकार शिरीष का वृक्ष एक अवधूत की भाँति बना रहता है।

प्रश्न : 3 द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।

उत्तर : 3 शिरीष का वृक्ष एक संन्यासी की भाँति होता है। वह दुख और सुख से हार नहीं मानता है। ग्रीष्म ऋतु में जब असहनीय गर्मी पड़ती रहती है, धरती और आसमान जलते रहते हैं। तब भी यह वायुमंडल से रस खींचकर हरा-भरा बना रहता है। वह मस्त, बेपरवाह, सरस, और मादक बना रहकर कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख देता है।

प्रश्न : 4 हाय, वह अवधूत आज कहाँ है। ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे ?

उत्तर : 4 लेखक के अनुसार शिरीष का वृक्ष धूप, वर्षा, आँधी लू आदि विषम परिस्थितियों में भी अविचल बना रहता है, उसपर ऋतुपरिवर्तन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसी प्रकार आज हमारा देश मार-काट, अग्नि-दाह, लूटपाट, हत्या आदि समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं। ऐसे समय में राष्ट्रीय एकता और धर्म निरपेक्षता स्थापित कर सकने वाले साहसी दृढ़-संकल्पी और आत्मविश्वासी चरित्र की आवश्यकता है।

प्रश्न : 5 कवि के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत कर लेखक ने साहित्य-कर्म के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है। विस्तारपूर्वक समझाइए।

उत्तर : 5 कवि साहित्यकार के लिए विषय-भोग से ऊपर उठे हुए योगी की स्थिर प्रज्ञता का होना आवश्यक है, उसे मस्त चिंता रहित सरस एवं अहंकार रहित व्यवहार करना चाहिए। उसे अपनी बुद्धि को स्थिर रखकर काव्य की रचना करनी चाहिए। उसका हृदय स्वच्छ एवं स्वतंत्र होना चाहिए। उसे सांसारिक मोहमाया से दूर रहना चाहिए, किंतु उसके साथ ही उसे सौंदर्य वर्णन के लिए एक सच्चा प्रेमी भी बना रहना चाहिए।

कालीदास द्वारा रचित मेघदूत काव्य उनके अनासक्त श्रेणी तथा अभिज्ञान शाकुंतलम में दुष्यंत को आकर्षित करने के लिए शकुंतला का सौंदर्य वर्णन उनके प्रेमी हृदय को दर्शाता है। यदि ये दोनों प्रकार की विशेषताएँ कालीदास में नहीं होती, तो वे इस प्रयास की रचना करने में समर्थ नहीं होती। इससे स्पष्ट होता है कि कवि साहित्यकार के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता विदग्ध प्रेमी का एक साथ होना आवश्यक है।

प्रश्न: 6 सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवि हो सकता है, जिसने अपने व्यवहार से जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है। पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर: 6 लेखक के अनुसार आज के युग में लोगों की अधिकार लिप्सा की भावना प्रबल हो चुकी है। वे नवीन को स्वीकार करने की अपेक्षा उसी पद या स्थान पर बने रहने के लिए उत्सुक रहते हैं, किंतु हमें ऐसा करने की अपेक्षा साहित्य समाज एवं राजनीति में नएपन या नयी पीढ़ी के अस्तीत्व को मानने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालने का साहस दिखना चाहिए क्योंकि संसार में वृद्धावस्था और मृत्यु ये दोनों अच्छी तरह से प्रमाणित और प्रमाणिक सत्य है।

Date :
P. No. :

प्रश्नः 7 आशय स्पष्ट कीजिए —

(ख) जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?.... मैं कहता हूँ कवि बनना है मेरे दोस्तों, तो फक्कड़ बनो।

लेखक के अनुसार सांसारिक विषय-वासनाओं में पड़कर कवि कविता या साहित्य की रचना नहीं कर सकता। वह मानता है, कि कवि को एक संयासी की भाँति संसार से विरक्त होकर रहना पड़ता है। अतः सांसारिक मोहमाया में फंसने की अपेक्षा फक्कड़ बनने वाला व्यक्ति ही कवि बन सकता है और उत्तम कविताओं की रचना कर सकता है।

26/9/24

SCHOOL IN-CHARGE
Vivekanand Vidhya Vihar
Hr. Sec. School, Biaora
Dise Code- 23300227812